International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 69-71

अनूप अशेष के नवगीतों में नया सौंदर्यशास्त्र

डॉ0 बीरेन्द्र कुमार त्रिपाठी

व्यवस्थापक और संपर्क अधिकारी, एम.पी. बिरला अस्पताल, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

शोध सार

नवगीतों में नवीनता, आर्कषण, सौन्दर्यता के पैमाने पर देखा जाये तो अनूप– अशेष के नवगीातों में एक नया सौंदर्यशास्त्र दिखाई देता है इनके नवगीतों में आत्मीय संबधों के जाल पर तैरने वाले अजस्र विम्बों की सम्पदाएँ भरी पडी है, नवगीत में प्रचलित गीतों से जब अपनी अभिव्यक्ति का शिल्प अलग किया तब उसके पास बिम्बों की समृद्वि ही सबसे अधिक थी, नवगीत समय के अनुसार स्वयं को बदल रहा था और शिल्प के कई–कई विधानों और उपकरणेां से जुड भी रहा था। अपनी अस्मिता के निषान गढते हुए समकालीन सन्दर्भो को समेट भी रहा था। इस प्रक्रिया में उसके सामर्थ्य के संकेत स्पष्ट् होने लगे थे। अनूप अशेष के गीत केवल अनूप–अशेष के गीत है उन पर किसी भी गीतकार की कोई परछाई नहीं है। सम्पूर्ण नवगीतों में एक अलग प्रकार की कलाकृति दिखाई देती है। जो पूरे रचनासंसार का सौन्दर्यशास्त्र है।

मूल शब्द : अनूप अशेष, नवीनता, आर्कषण, सौन्दर्यता।

प्रस्तावना

अनूप–अशेष के नवगीतों का अध्ययन एवं रसास्वादन करने से यह बात प्रमुखता से आती है कि इन गीतों में एक नवीन सौंदर्यषास्त्र दिखाई देता है अशेषजी के नवगीतों में यह साफ–साफ पूँछा जाता है कि 'रिष्ता दिन से बना न पाये/षाम पूंछते हो' तो इसमें केवल दिन और षाम के सन्तुलन की बात नहीं होती, जीवन की सारी ऊँचाईयों को नापने की बात हो जाती है। किसी पानी–मिट्टी वाले से जब काम पूँछा जाता है तो वह अनूप अशेषका गीत होता है। गीतों में जो सादगी दिखती है वह अन्यत्र नहीं मिलती है – आदिवासी देह और आदम की हवा की बात होती है, लडकियों में घूप चुनने की बात होती है और झुरियों में खाट की तो सीधे दृष्टि 'आदिम देहों के अरण्य में घर' पर चली जाती है। जहॉ अनूप अशेषनिहितार्थ में अपना होना पिरो रहे होते है। जहॉ संगीत–लय में लोग, मौसम, दिन बंधे हुए हों और घर 'नींद के सपने –बुने से'– तो वहॉ भी खुली पॉखों जैसा–लिखने वाले तो केवल अनूप–अशेष ही है।

अनूप–अशेष के नवगीतों में आत्मीय सम्बंधों के जाल पर तैरने वाले अजस्र बिम्बों की सम्पदाएं भरी पडी है। नवगीत में प्रचलित गीतों से जब अपनी अभिव्यक्ति का षिल्प अलग किया तब उसके पास विम्बों की समृद्वि ही सबसे अधिक थी। नवगीत समय के अनुसार स्वयं को बदल रहा था और षिल्प के कई–कई विधानों और उपकारणों से जुड भी रहा था। अपनी अस्मिता के उसके सामर्थ्य के संकेत स्पष्ट् होने लगे थे। मानवीय जीवन स्थितियों और समाजार्थिक पक्षधरता का अख्यान साथ–साथ रचना प्रारंभ हो गया था। इस अख्यान में जीवन को समग्र रूप से देखने की पहल भी शुरू हो गयी थी तथा उपनी परस्पर विरोधी विषेशताओं के साथ मनुष्य की जिजीविषा को उद्दाम रूप से रचने का उत्साह और साहस भी।

पहले के गीतों में कल्पना की कुछ की कुहेलिकाओं में जीवन के केवल क्षण व्यक्त होते थे। वे उतने ही अपारदर्षी होते थे कि उनमें जीवन के सच व्यक्त नहीं हो पाते थे। छायावाद के बाद पहली बार नवगीत ने मनुष्य की जिजीविषा को सामने लाकर जीवन को जीने योग्य बनाया और कल्पनाओं को कुहेलिकाओ से निकालकर यथार्थ की जमीन पर खडा किया। स्वतंत्रोत्तर काल में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों के कारण नवगीत में कुंठा, निराषा, पराजय और अंधेरों की बात होने लगी थी। स्वतंत्रता के पूर्व युवाओं की सोच में जो जीवन और समाज था स्वतंत्रता के बाद वे उनसे पूरी तरह मुक्ति चाहते थे। अब उनको हताषा, पराजय और आत्म–ग्रंथि नहीं, बदली परिस्थितियों में वे अपने स्वप्नों को साकार होते हुए देखना चाहते थे, पर ऐसा हुआ नहीं, वे मोह–भंग से आकुल–व्याकुल हो रहे थे। स्वतंत्रता से उपजे मोह–भंग ने युवाओं को असमंजस में डाल दिया था। वे बडे कठिन दिन थे समाज के उस वर्ग के लिए जो जीवन में सुख–षांति का स्वप्न देखते हुए अचानक अनिष्चत भविष्य के कारण दिषा–षून्य हो रहे थे। नवगीत भले अपनी भूमिका संभाल ली थी और इसकी षांति अपने परिवेष कों जीवन–सापेक्ष उत्साह, उमंग, राग और मानवीय करूणा से मरने लगी। अपने निहितार्थ को सम्बेदनषीलता के सिक्त कर उसमें स्वयं को जीवनोन्मुख किया। नवगीतकारों की अपराजेय ऊर्जा के वे शसक्त प्रमाण बनकर अभिव्यक्त हुए।

अनूप–अशेष के नवगीतों में ऐसा नहीं है कि अभाव नहीं है। जीवन के बुनियादी दुःख नहीं है पर वे इतने सृजनषील है कि उनके रचनात्मक पहल ही अधिक दिखते है।

ताल में हम रहे, नहरों में /
और सूखे बाढ में भी हम/
दिन फकीरों –से हमारे गॉव के /
दुआ देते भूख में भी कम/
भाभियों का छोह/ मॉ–सी जोह
लौटते सपने रहे फिर बुन।।

गॉव–जवार की मॉओं का चेहरा अनूप अशेष के नवगीतों में भी वही उदास करने वाला है पर एक छोटी से बात से यह चेहरा अनूप अशेष के गीत की मॉ का चेहरा बन जाता है`।

कितने–कितने सूरज डूबे /
चूल्हे कूपों में मोह भरी /
रिन छोह भरी फटकी सूपों में/
सुखी देह ऑच का मरना/
रोटी पायी मॉ।।

लौट आएंगें सगुन पंछी– अनूप अशेषका बडा ही ताजा और साफ–सुथरी भावानुभूतियों से भरा साधारण अनुभवों से रचा असाधारण नवगीत संग्रह है इसमें कुर्ते की गंध टंगी शीर्षक से एक

बडा ही प्यारा नितान्त गीत है जिसमें मॉ के सम्बोधन से बहुत सारी आम बातें कही गई है जो निम्न मध्य वर्गीय जीवन के बीच से निकलकर आती है।

अम्मा, सॉझ हुई/ बाबा लौटै नहीं /
कचहरी से, थाली धोयी रखी दुपहरी से /
खूँटी पर कुर्ते की गंध टॅगी, पानी बॉटा–/
नहीं प्रधानों ने, सूखे को प्यास लगी /
अम्मा, सॉझा हुई, गोरैया के पंख/

फैल कर गिरे जलहरी से।। (अनूप अशेष सन्दर्भ क्र0. 1)

वस्तुतः निम्न मध्यवर्गीय अधिकांष लोंगों की यही षैली होती है कि समुचित रख–रखाव की व्यवस्था घर में नहीं रहने के कारण वे आफिस, कचहरी या कहीं बाहर से आकर दरवाजे के पीछे लगी खूँटी पर अपनी कमीज कुर्ते आदि टॉग देते है। ये उनकी सुविधा भी है और घर की सीमा भी। अनूप–अशेषकी साधारण लोगों की जीवन षैली की इतनी अधिक पहचान है कि वे बडी आसानी से इन बातों को अपने अनुभव का अंग बना लेते है। यह दृष्य केवल गॉव में रहने वाले लोगों तक सीमित नहीं है, षहरों में भी बडी आसानी से ये दृष्य दिख जाते है। दरवाजे पर लालटेन रख आना, खेंतो। में मुकदमों का उगना, पुलिस का खबर लाना, सभी बडी आम कइम बाते है। बिना गॉव का जीवन जिये, इन छोटी–छोटी बातों का अनुभव नहीं हो सकता , जैसे काष्मीर को ऑखों से देखकर और किताबों में पढकर जब लिखा जाएगा तो उसके चित्रण में जमीन–आसमान का अन्तर होगा। अनूप–अशेषजी के काव्य में प्रामाणिक सुगंध रहती है।

अनूप–अशेषके नवगीत की पंक्तियों को पढने के बाद अनेकानेक भावार्थो की अनुभूति होने लगती है। जिनकों समेटना कठिन होता है। हर सिंगार के फूलों की तरह झरते है इनके अर्थ। अर्थ की लय और इनमें समाहित सांगातिक संधि। इस संग्रह का गीत– 'हुयी उमर से बडी बेटियॉ' – तो एकाध अवतरण पढकर धैर्य बांधा नहीं जा सकता। बारम्बार पढने के बाद भी मन नहीं भरता –:

देहरी की हथकडी बेटियॉ / हुई उमर से /
बडी बेटियॉ।।

इसी प्रकार एक महत्वपूर्ण नवगीत है –'दुख पिता की तरह होते है।' इसमें जो गीतात्मक अभिप्रायों से जोडते हुए उस वस्तु–सत्य तक ले जाता है जहॉ हमारा इन षब्दों से होता है। जिसमें रचाव की इतनी बारीकियॉ है, इतने विम्ब–विन्यास की जगहे, प्रतीकों के लालित्य और फिर अनजाने में ही उम्मीद बोने की बाते है।

कुछ नहीं कहते/न रोते है /दुःख /
पिता की तरह होते है / इस भरे तालाब से /
बॉधे हुए मन में /धुऑते से रहे।
ठहरे जागते / तन में / लिपटकर हममें /
बहुत चुपचाप/ सोते है।।

अनूप–अशेषजी को जो बात कहनी है, वह साफ–साफ षब्दों में कह दिये है। गीतकार के गीतों में अछूत आषान्वित है। विसंगतियों से इन्होंने हाथापाई नहीं की है। अपितु इनके मनोबल के आगे विसगंतियॉ स्वयं राह छोडने को तैयार हो जाती है। जीवन के विद्रूप इसी तरह समाप्त होने लगते है इनके गीतों में। अनूप अशेषजी मूल्य और आस्था के गीतकार है। वस्तुतः विसंगतियों को बदलने की छटपटाहट में कभी–कभी गीतकार का अकेलापन दिखता है। मगर वैसा है नहीं। बहुत कुछ नष्ट् हो जाने, बदल जाने के बाद भी जीवन में अभी भी बहुत कुछ बचा है जो श्रेय है उसकी प्रियता को बचा लेने की सम्बेंदनात्मक नमी भी गीतकार के पास बहुत है। तभी तो वह व्यवस्था की विडम्बनाओं को परे करता जीवन की आसक्ति को ढूँढ लेता है।

अधरों की रात/ बताषे की रात/ कातिक की रात/
शरद मासे की रात/ अपने घर के / पिछवाडे जागने /
ऑचर का श्वेत–पुष्प/ आ जाना मॉगने।। (अनूप अशेष सन्दर्भ क्र0. 2)

जीवन जहॉ जल तरंग की तरह बजता है मलय गिरि की सुगंध को विखेरता हुआ आगे चलता है। 'वंसत की बयार की सी छटा एवं कोयत की कुहुक की आवाज सी मधुर वातावरण का आनंद से परिपूर्ण दृष्य जो सम्पूर्ण चराचर जगत को सुख प्रदान करता है। और संगीत की सी धुंन सुनाता है। ऐसी काव्य कृति को अशेष जी के काव्य में मिलता है।

फूल सभी गंध भरे/ गंधों की बॉहे /
तुम जैसी / कोमल थी / पॉवों की राहें/
बोल मधुर बाहर के/ भीरत के पैने।।

इस वाणिज्यिक सदी में स्त्रयॉ काव्य का प्रिय विषय रही है स्त्री विमर्ष की सीमा तक नहीं भी जाए, पर अनूप अशेषको उन स्त्रियों की चिन्ता है जो–

एक सपना खो रही है /कई सपने बो रही है /
हाथ में / कंधा उठाए / आईने को धो रही है /
तवे के नीचे सुलगती / ऑच लेकर भेंट में /
स्त्रियॉ अब छन छनाती है।।(अनूप अशेष सन्दर्भ क्र0. 3)

प्रकृति अनूप अशेषके नवगीतों का मूल अवयव है। वह इनके भीतर कुद इस तरह अन्तर्लीन है कि वह उनकी मानसिक बनावट का ही एक हिस्सा लगती है। प्रकृति की सुन्दरता गीतकार के मन के अणु–अणु में अपनी बसाहट लिए हुए है। प्रकृति के विस्तृत सौंदर्य के साम्राज्य ने साक्षी होने के कारण ही अनूप–अशेषने एक अलग ही सौन्दर्यषास्त्र गढा है। अनूप–अशेषकी प्रकृति में केवल फूल–पत्ते, नदी, झरने, समुद्र ही नहीं है, अपरिचित हरियालियॉ है, धूप चरते हिरन है, कोदो वाली खीर भी है जो छोटे किसानों–मजदूरों के जीवन में उत्सव बुनती है –

मृग तन –सा कॉपे/ ऑखों में / हिरना धूप चरे।
\+ \+ \+
मछली वाली धूप हो गई/ साथ वकुल के।।

अनूप–अशेष प्रकृति से जितना कुछ लेते है चक्रवृद्वि व्याज सहित देते भी है। प्रकृति का सम्मोहन उनके वष में है। वे चाहे जैसा–जितना चहे गढ लेते है।

पूरा आकाष उतर आया/ जैसे छत पर /
एक दिया जला/ पच्छिम कोने /
नाखून धरा हो ज्यों खत पर।।

ऑगन में लीपे गोवर/ नींदों के गोबरैले सारे' – यह सब क्या है ? कोई जादू वाला हाथ ही यह सब लिखता है। गहगहाकर धान का फूलना, धूप के छातों का तनना, कॉस वन की फूलती का भीतर पीराना, दरवाजों में जुन्हईया की जी का अॅजीर देखना, धूप के छातों का तनना, सडक का काली नदी की भंवर जैसा छेकना, गुलाब की डाली का सूखकर कनेर हो जाना, गॉव का पीपल–फूनगी की तरह होना, धार का रेतों में सोना और एक ओर ये मुहावरे है, गीतकार के गीतों में अलग से कोलाज भी बनाते है। ये दृष्याबलियॉ विम्बधर्मी है। सौंदर्य का अपार साम्राज्य लिए।

इनको पढते हुए मन की नदी में सुन्दरता का द्वीप बनते रहे है। इनको पढते हुए साथ–साथ गुनगुनाने का मन करता रहता है। सांगीतिक लय इन गीतों के षब्द–षब्द के रेषे से भरी है।

नवगीतों में गॉव एवं षहर की हॅसी की बात तो एक अनोखा सौन्दर्य विधा है। स्त्री हो या पुरूष षहर की हॅसी को बाजार नियंत्रित करते

है। उनमें कई प्रकार के तनाव और जरूरतों के अक्स होते है। बहुधा गॉव की अनायास हॅसी पर ही निछावर होते है क्योंकि उनकों मालुम है कि षहर में हॅसी प्रायोजित या रैम्प पर चलने की तरह। जब ऐसे बिम्ब मिलते है जिसकी पारदर्षी कोमल सुन्दरता भी पकड से बाहर होती रहती है।

मदर वात्सायायन के इस गीत में प्रयुक्त विम्ब की तरह 'गोरी मोरी गेहुअन सॉप, महुर धरे। गेहुॅअन को बिछलन के कारण पकडना कठिन होता है। सुन्दरता भी एक नषा है, धीरे–धीरे आदमी पर असर करता है, पर अनूप–अशेषके इस विम्ब को क्या कहिएगा जिसकी सुन्दरता, कोमलता, लावण्य से भरी देह–दीप्ति पक डमें आकर भी निकल जाती है। यह पूरा गीत –'मेड वंषी सी वह (मेरे गॉव की हॅसी थी) बिम्बों के आईने पर लिखा है जो एक साथ चमकते है और ऑखें चुॅधियॉ जाती है। थरथराता सौन्दर्य पुरइन के पत्ते पर झलमल बूॅदों की तरह ढलकते लगता है, जितना पकडों उतने ही भाग जाते है –:

मेड बंशी सी बजाती है/ एक लडकी की
सयानी देह/ खुरपियों तक थरथराती है /
होंठ के बाहर निराई गीत/ होंठ के भीतर
किसी का नाम, भाईयों का भावजों का/
ओढ कर संकोच, घास–तिनकों में /
खुरचती धाम/ चूडियों की टूटती मरजात /
अब तो खनखनाती है। (अनूप अशेष सन्दर्भ क्र0. 4)

अनूप–अशेषके नवगीतों में सौंदर्य पक्ष उनके वस्तुलोक की तरह ही अत्यन्त समृद्य है। कई जगह गीतों की बुनावट में ऐसेषब्दों औरा पंकित्यों को तराषा गया है निमें गीतों की मर्यादा बढी है। और उनका सौंदर्यषास्त्र ऊॅचाईयॉ नापता गया है। 'सगे अपनी बॉह में /टूटे हुए घर के, खरगोष घाटी, सूप भर गिरस्ती, पकी वाली सी धूप, नइहर –से हरे खेत, पीहर–सी मेड, तहसील–सी धमकी हवा, ठेले की लडकी, रात सरौता और सुपारी, नींद कंधों से लुढकती, हम हुए जय हिन्द आदि ऐसेषब्द गठन है जिनमें उपमा, रूपक, उद्भावना, आदि गीत के विधायक तत्वों का भी सन्निवेष हो गया है।

समकालीन नवगीत जितनी ऊॅचाईयों तक गया है, अनूप–अशेष के नवगीत वहॉ पहुॅचे हुए है। इन नवगीतों की बॉहों में स्वप्न भरे हुए है और मनोरथ आकाष तक पहॅच गये है सर्वत्र –सौन्दर्यता की छटा परिलक्षित होती है।

सन्दर्भ सूची

1. लौटे आयेगे सगुन पंछी – अनूप अशेष – पृष्ठ क्र0. 9–10
2. इन वसन्त मोड़ों पर – अनूप अशेष – पृष्ठ क्र0. 11
3. दिन ज्यों पहाड़ के – अनूप अशेष – पृष्ठ क्र0. 66–67
4. वह मेरे गांव की हंसी थी – अनूप अशेष पृष्ठ क्र0. 69–70